

3rd Discussion with Buddhists Varanasi	बौद्धों के साथ चर्चा
<p>KRISHNAMURTI (K): Sir, I would like to ask several questions. Is there a line, a demarcation, where self-interest ends and where a state which is not self-interest begins? We all have self-interest; it is in knowledge, in language, in science, in every part of our life. In every way of our life there is self-interest, and that has created havoc. And how far does it extend? And where do we draw the line and say: here it is necessary, there it is not necessary at all? - in daily life; not in science, in mathematics, in knowledge. I am talking factually, not theoretically.</p>	<p>कृष्णमूर्ति (कृ०): सर, मैं अनेक प्रश्न उठाना चाहूँगा। क्या कोई ऐसी निर्णायक रेखा है जहाँ स्वार्थ समाप्त होता है और जहाँ से उस स्थिति का आरम्भ होता है जो स्वार्थ नहीं है? हम सभी के स्वार्थ हैं; ज्ञान, भाषा, विज्ञान और हमारे जीवन के प्रत्येक हिस्से में वह है। हमारे जीवन की हर राह में है हमारा स्वार्थ, और उसने भीषण तबाही उत्पन्न की है। कहाँ तक है इस स्वार्थ का फैलाव? हम कहाँ पर एक रेखा खींच कर कह दें, “यहाँ यह आवश्यक है, और वहाँ यह बिल्कुल ही आवश्यक नहीं है? अपने नित्य के जीवन में; विज्ञान, गणित और ज्ञान के क्षेत्र में नहीं। सैद्धान्तिक रूप में नहीं, मैं तथ्यगत बात कर रहा हूँ।</p>
<p>First Participant (P1: This question is very difficult to answer if you lay down certain conditions, like the difficulties we meet with in society; but if you do not lay down conditions, then I shall try to answer.</p>	<p>परिचर्चा में सहभागी (स०): यदि आप निश्चित शर्तें रख देंगे तो यह प्रश्न बड़ा ही कठिन बन जाएगा, ठीक वैसी ही कठिनाइयाँ जो समाज में हमारे सामने आती हैं; पर अगर आप शर्तें न रखें तो मैं उत्तर देने की कोशिश करूँगा।</p>
<p>K: All right, I remove the conditions. Not remove; life is this. I am not laying down the condition, I am not laying down the law, the way you should think, but life shows me that in every work in every part of the world self-interest is dominant. We play with religion, we play with K as a plaything, we play with all kinds of things, but the thread of self-interest is very, very strong, and I ask myself, where does it begin, and, is there an end to it. Where does it start, where does it end, or is there no end at all? God is my self-interest, so are ceremonies, scholarship, science. The man in the corner who sells tobacco there, is full of self-interest.</p>	<p>कृ०: ठीक, मैं शर्तें हटा रहा हूँ। नहीं, हटाना नहीं, यही तो जीवन है। मैं शर्त या नियम नहीं बना रहा हूँ। आप कैसे सोचें इसके लिए मैं नियम नहीं बना रहा हूँ, पर जीवन मुझे यह दिखा रहा है कि प्रत्येक कार्य में, संसार के प्रत्येक भाग में स्वार्थ हावी है। धर्म के साथ, कृष्णमूर्ति के विचारों के साथ, सभी प्रकार की चीजों के साथ, हम इस खिलवाड़ करते हैं, पर स्वार्थ का सूत्र बहुत मजबूत है, और मैं स्वयं से पूछता हूँ यह कहाँ से शुरू होता है और कहाँ इसका अंत होता है अथवा इसका कोई अंत नहीं है? ईश्वर हमारा स्वार्थ है धार्मिक अनुष्ठान, विद्वता, विज्ञान भी।</p>
<p>P1: There is some book learning that underlies my answer, but I will try to answer from my experiences as an individual human being.</p>	<p>स०: जो मैं कहने जा रहा हूँ उसके पीछे मेरा किताबी ज्ञान भी है लेकिन व्यक्तिगत जीवन में जो अनुभव होता है उसके आधार पर भी मैं कुछ कहना चाहता हूँ।</p>
<p>K: Yes, as a human being - even from your books, from your studies, you must have, they must all have, asked this question in different ways.</p>	<p>कृ०: हाँ, एक व्यक्ति के रूप में आप जो कुछ अनुभव करते हैं। पुस्तकों एवं अपने अध्ययन आदि के आधार पर आपने और अन्य लोगों ने भी नाना प्रकार से यह प्रश्न उठाया होगा।</p>

<p>P1: When I try to understand myself, look at myself as I am, factually, then I put myself into certain categories. When I try to discover myself in action, in my relationship to other people, then I find an element of self-interest, and I can, with some effort, try to be free of this self-interest, and I do unburden myself to a certain extent.</p>	<p>स०: जब मैं अपने अस्तित्व को निश्चित रूप से स्वीकार करता हूँ तो मैं स्वयं को कुछ खास श्रेणियों में रख लेता हूँ। इस गहरी आत्म-स्वीकृति के कारण मुझे अपने सारे व्यवहार और परस्पर संबंधों में स्वार्थ की गंध मिलती है। अपने अस्तित्व को अस्वीकार कर मैं इस स्वार्थ से मुक्त होने की कोशिश करता हूँ, और जिस हद तक मैं स्वयं को अस्वीकार कर पाता हूँ उस हद तक स्वार्थ का बोझ अपने ऊपर हल्का कर लेता हूँ।</p>
<p>K: But that is also self-interest.</p>	<p>कृ०: पर वह भी स्वार्थ है।</p>
<p>P1: When I try to establish my existence, my being, then my actions become more self-centred, and to the extent to which I unburden myself, the self-interest decreases.</p>	<p>स०: जितनी गहराई से मैं अपने अस्तित्व को स्वीकार करता हूँ, उतना ही मेरा व्यवहार स्वार्थपूर्ण हो जाता है, और जिस हद तक मैं स्वयं को नकारता हूँ उस हद तक मेरा स्वार्थ भी घट जाता है।</p>
<p>K: No, you are missing my point. I want to make it very, very simple. The more simply we think, the better the action, the better the way of looking at things. From childhood the problems begin - I have to go to school, I have to read and learn, I have to learn mathematics. The whole of life becomes a problem because, basically, I meet life as a problem. In the English language a problem means something thrown at you. Problema comes from Greek; it means something hurled at you and you have to reply to it. So, from childhood, my brain is conditioned to live with problems and solve problems - and those problems can never be solved. I keep this going, problem after problem; all my life becomes a problem, living becomes a problem. And I say, I don't want to live that way, it is wrong to live that way. So I am asking myself, does self-interest create the problem, or can the mind, brain, be free of problems and therefore tackle problems? You see the difference? I don't know if I am making myself clear. It is a fact that I have to go to school, learn, read, and so on. My brain gradually gets conditioned to living with problems, the brain becomes the problem - everything becomes a problem. So I come to you to solve the problem the brain has, which may be linked with self-</p>	<p>कृ०: नहीं, मेरी बात आप नहीं पकड़ पा रहे हैं। मैं इसे अत्यंत सरल बनाना चाहता हूँ। जितनी अधिक सरलता से हम सोचेंगे उतना ही बेहतर हमारा कर्म होगा और चीजों को हम बेहतर ढंग से देख पाएंगे। बचपन से ही समस्याएं शुरू हो जाती हैं, मुझे स्कूल जाना है, मुझे पढ़ना और सीखना है, मुझे गणित पढ़ना है। सम्पूर्ण जीवन समस्या बन जाता है, क्योंकि मूलतः हम जीवन को समस्या मानकर जीवन का सामना करते हैं। अंग्रेजी भाषा में समस्या का अर्थ है कोई चीज जो आप पर डाल दी गयी है। ग्रीक भाषा का शब्द है प्रोबलेमा, इसका अर्थ है कि आप पर कुछ फेंक दिया गया है और आपको उसका जबाब देना है। अतः बचपन से ही, समस्याओं के साथ जीने और उनका समाधान करने के लिए मेरा मस्तिष्क संस्कारित किया गया है और उन समस्याओं का समाधान कभी भी नहीं हो सकता। मैं यह क्रम बनाये रखता हूँ, एक समस्या के बाद दूसरी समस्या; मेरा सम्पूर्ण जीवन समस्या बन जाता है। समस्या बन जाता है जीना। और मैं कहता हूँ कि मैं इस तरह से जीना नहीं चाहता, इस तरह से जाना गलत है। इसलिए मैं स्वयं से पूछता हूँ: क्या स्वार्थ ही समस्या उत्पन्न करता है, और क्या मन एवं मस्तिष्क समस्याओं से दूर हो सकता है ताकि वह समस्याओं से निपट सके? क्या आप अन्तर देख पा रहे हैं? मालूम नहीं कि मैं स्वयं को स्पष्ट कर पा रहा हूँ या नहीं। यह एक तथ्य है कि मुझे स्कूल जाना है, सीखना है पढ़ना है, इत्यादि। समस्याओं के साथ रहते-रहते हमारा मस्तिष्क उनका अभ्यस्त हो जाता</p>

interest.	है। मस्तिष्क ही समस्या बन जाता है हर चीज एक समस्या बन जाती है। तो मस्तिष्क की इस समस्या के समाधान हेतु मैं आपके पास आता हूँ। हो सकता है कि यह समस्या स्वार्थ से जुड़ी हो।
P1: Creating or receiving problems and trying to solve them has become a rule of life for us, and this way of doing things nurtures my being.	स०: समस्याएं पैदा करना और उनका समाधान खोजते रहना हमारे जीवन का एक नियम बन गया है, और इस प्रकार समस्याएं ही हमारे अस्तित्व का निर्माण करती हैं।
K: Therefore your being is a problem. But you are missing my point. Your being is the identity with the country, with the literature, with the language, with the gods; you are identified, therefore you have taken root in a place, therefore that becomes the being. There is no separate being apart from that - no spiritual being, god-being - I don't believe in all that; I am entirely sceptical. So I say to myself, why have I, or you, made life, which is meant to be lived like a tree growing beautifully, into this? I can't live that way, I won't live that way. Whether god exists, etc. - I am totally indifferent to all that, I totally discard all that, and I say to myself, I won't live the way you are living; I won't. I will go away to the mountains rather than live that way. You have destroyed living, you have destroyed living by knowledge, by science, by computers - you have destroyed my living. I can retire into the mountains, but that makes no meaning.	कृ०: अतः आपका अस्तित्व ही एक समस्या है। लेकिन आप मेरी बात नहीं पकड़ पा रहे हैं। आपका अस्तित्व देश के साथ, साहित्य के साथ, भाषा के साथ, देवी देवताओं के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। इन चीजों के साथ आपने अपना तादात्म्य बना लिया है और उन्हीं में अपनी जड़ें स्थापित कर ली हैं, और इसलिए यही आपका अस्तित्व बन गया है। उससे अलग कोई अस्तित्व नहीं है - कोई आध्यात्मिक अस्तित्व वगैरह नहीं। उन सबों में मेरा विश्वास नहीं है, मैं पूरी तरह संशयवादी हूँ। इसलिए मैं स्वयं से पूछता हूँ : मैंने अथवा आपने, जीवन को ऐसा क्यों बना दिया, जीवन जो सुन्दर रूप से विकसित हो रहे वृक्ष की भाँति जीने के लिए है। मैं तो उस तरह नहीं जी सकता, मैं वैसे नहीं जीऊँगा। ईश्वर है या नहीं आदि बातों में मेरी कोई भी दिलचस्पी नहीं, मैं उन सब बातों का पूर्णतया परित्याग करता हूँ, और मैं स्वयं से कहता हूँ, जिस प्रकार आप जी रहे हैं मैं वैसे नहीं जीऊँगा। उस तरह जीने से बेहतर है कि मैं पहाड़ों, जगलों में चला जाऊँ। आपने जिन्दगी को नष्ट कर डाला है ज्ञान द्वारा, कम्प्यूटर द्वारा। आपने मेरी जिन्दगी को नष्ट कर दिया है - मैं पहाड़ों में जा सकता हूँ, पर इसमें कोई मतलब नहीं है।
P1: Why are you so keen to safeguard what you call living? Suppose I betray it, I break it, what difference does it make?	स०: आप जीवन को, जीने को बचाना क्यों चाहते हैं? अगर हम तोड़ दें तो उसमें क्या दिक्कत है?
K: I am not saying I want to live; that is not my point. I say, why do I live this way? I am not safeguarding it by asking this. Why have I to go through all this appalling process? Sex becomes a problem, eating becomes a problem, everything is a problem. And I don't want to have problems, which does not mean that I deny life. I don't want problems, therefore I meet problems.	कृ०: मैं जीना चाहता हूँ ऐसा मैं नहीं कह रहा; मेरा आशय यह नहीं है। मैं तो यह प्रश्न करता हूँ: मैं इस ढंग से क्यों जी रहा हूँ? यह पूछ कर तो मैं इसका बचाव नहीं कर रहा हूँ। जीने की इस भयंकर प्रक्रिया से मुझे गुजरना पड़ता है? काम वासना एक समस्या बन जाती है, खाना एक समस्या बन जाता है, हर चीज एक समस्या बन जाती है। और मैं नहीं चाहता कि समस्याएं रहें। इसका अर्थ यह नहीं कि

<p>Because my brain won't work in problems, I can meet all problems.</p>	<p>मुझे जीना अस्वीकार है। मैं समस्याएं नहीं चाहता, अतः मैं समस्याओं का सामना करता हूँ। चूँकि मेरा मस्तिष्क समस्याओं के बीच काम नहीं कर पाता अतः मैं सभी समस्याओं के बीच काम नहीं कर पाता अतः मैं सभी समस्याओं का सामना कर सकता हूँ।</p>
<p>P1: As I understand it, you are saying that problems should not enter, problems should not constrain your being. You don't want to deny life, but you want not to be affected by problems.</p>	<p>स०: आप जो समझा रहे हैं उसमें हमें ऐसा लगता है कि आप समस्याओं को तो नहीं आने देना चाहते या समस्याओं से बाधित होना नहीं चाहते लेकिन अपने अस्तित्व से इनकार भी नहीं करना चाहते। क्या यह बात सही है?</p>
<p>K: No, no. You have thoroughly misunderstood me. I am saying, from birth to death life is treated like a problem: school, college, university, then job, marriage, sex, children - one of them is naughty or a genius and I utilize or exploit that boy and keep going all my life. Death then becomes a problem. Then I say, is there a living further, reincarnation and all that? You see what humanity has done? This is life. Why can't my brain be simple enough, free enough to say this is a problem and solve it? That is, the brain is free to solve it, not add another problem to it.</p>	<p>कृ०: नहीं, नहीं। आपने मुझे बिलकुल गलत समझा। मैं यह कह रहा हूँ, जन्म से मृत्यु तक जीवन को एक समस्याक्रम के रूप में लिया जाता है। स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय, उसके बाद नौकरी, विवाह, सेक्स, बच्चे, उनमें एक नटखट अथवा मेधावी हो सकता है और मैं उस लड़के का इस्तेमाल करता हूँ अथवा उसका शोषण करता हूँ और जीवन-पर्यन्त इसी प्रकार चलता जाता हूँ। तब मृत्यु एक समस्या बन जाती है। और मैं पूछता हूँ, “क्या आगे भी जीवन है?” पुनर्जन्म इत्यादि। मानवजाति ने आज तक जो कुछ किया है उसे आप देख रहे हैं न? यही है जीवन। हमारा मस्तिष्क एकदम सरल क्यों नहीं हो पाता, यह कहने के लिए एकदम स्वतंत्र क्या नहीं हो पाता कि यह समस्या है और इसका समाधान करना है? अर्थात्, मस्तिष्क उसका समाधान करने के लिए स्वतंत्र रहे, उसमें एक और समस्या न जोड़े।</p>
<p>P2: If I may say so, sir, the problem does not come from outside; the problem arises in this brain, which feeds on this problem, which creates this problem. Why doesn't it immediately destroy it at that very instant?</p>	<p>स०: सर, मैं तो कहना चाहूँगा कि समस्या कोई बाहर से नहीं आती; समस्या इसी मस्तिष्क में उत्पन्न होती है। हमारा मस्तिष्क इन्हीं समस्याओं पर पलता है। वही समस्या का निर्माण करता है। समस्या को यह तुरन्त उसी क्षण खत्म क्यों नहीं कर लेता?</p>
<p>K: Because it has not solved any problem.</p>	<p>कृ०: क्योंकि इसने किसी भी समस्या का समाधान नहीं किया है।</p>
<p>P1: Does the brain have that capacity of ending?</p>	<p>स०: क्या समाधान का समार्थ्य मस्तिष्क में है?</p>
<p>K: Yes, but I must distinguish, make clear one point. The brain is the centre of all our nerves, all our sensations, all our reactions, our knowledge, our relationships, quarrels and all that. It is the centre of our</p>	<p>कृ०: हाँ, पर हमें निश्चय ही एक अन्तर कर लेना चाहिए, एक बात स्पष्ट कर लेनी चाहिए। हमारा मस्तिष्क केन्द्र है हमारे समस्त स्नायुओं का, लड़ाई-झगड़े वगैरह का। हमारी चेतना का यह केन्द्र है, और इस चेतना को हम अपनी मानते हैं - मेरी</p>

<p>consciousness, and that consciousness we treat as mine - my consciousness. I say, it is not mine; it is not personalized as K. And it is not yours because every human being on earth goes through this torture - pain, sorrow, pleasure, sex, fear, anxiety, uncertainty, hoping for something better and so on; that is our consciousness. So that consciousness is not yours; it is human. It is humanity. I am humanity - not all of you plus me. I am humanity.</p>	<p>चेतना। मैं कहता हूँ कि यह चेतना मेरी नहीं है, कृष्णमूर्ति की यह व्यक्तिगत चेतना नहीं है। और यह चेतना आपकी भी नहीं है, क्योंकि धरती का प्रत्येक आदमी इस यातना से गुजरता है - पीड़ा, दुःख, क्षणित सुख, सेक्स, चिन्ता, अनिश्चितता, कुछ बेहतर की आशा इत्यादि। यही है हमारी चेतना। अतः यह चेतना आपकी नहीं है बल्कि यह मानव चेतना है। यह चेतना ही मानवता है। मैं मानवता हूँ आप सब और मैं नहीं। मैं मानवता हूँ।</p>
<p>P3: It seems to me that we know of two kinds of action: one which is thought out by the brain, calculated, and which therefore invariably contains the seed of self-interest, is motivated by self-interest. I don't think the brain is capable of doing anything that does not contain in it the seed of self-interest, because it is the instrument meant for that purpose. But there is also spontaneous action which we experience occasionally, which is born just out of love, not as a product of thinking. And because man does not know what to do with this kind of action, because there is nothing he can do about that kind of action, he has cultivated the other - he has cultivated what his brain can do well, what it can calculate, what it can achieve, and the whole world is therefore filled with such activity, such action. And that has become our life. And the other, which is the vital, is occasional.</p>	<p>स०: मुझे ऐसा लगता है कि हम दो तरह के कर्म ही जानते हैं: एक वह जो मस्तिष्क द्वारा विचारित और निर्णीत है, और इसलिए उसमें अनिवार्य रूप से स्वार्थ का बीज मौजूद है, स्वार्थ से प्रेरित है। मैं नहीं समझता कि मस्तिष्क कोई भी ऐसी चीज करने में समर्थ है जिसमें स्वार्थ का बीज नहीं हो। क्योंकि यह उसी के लिए बना है। पर ऐसे सहज कर्म भी हैं जिनका अनुभव हम कभी-कभी करते हैं, जो विचार-प्रेरित नहीं है बल्कि जिनका जन्म प्रेम से हुआ है। और चूँकि आदमी यह नहीं जानता कि ऐसे सहज कर्म का क्या किया जाए, अतः उसने अन्य चीजों का निर्माण कर लिया है उसने वह सब कुछ विकसित कर लिया है जिन्हें उसका मस्तिष्क अच्छी तरह कर सकता है, जिनका वह हिसाब लगा सकता है, जिनकी उपलब्धि वह कर सकता है, और सम्पूर्ण संसार भरा है ऐसे कर्म और गतिविधियों से। यही बन गया है हमारा जीवन। और वह जो सर्वाधिक जीवंत और महत्वपूर्ण है यदा कदा ही घटित होता है।</p>
<p>K: I am not coming to that for the moment. The mind is different from the brain - totally dissociated - has no relationship whatsoever. Love has no relationship with self-interest. Don't bring in love for the moment. The fact is that love may exist. We may have sympathy, empathy, affection, pity - but that is not love, so I leave that aside. That's all for the moment. Love and self-interest cannot exist together. Problems and love cannot exist together. Therefore problems have no meaning if the other exists. If the other is, problems are not.</p>	<p>कृ०: फिलहाल हमलोग इस पर चर्चा नहीं करेंगे। मन वस्तुतः मस्तिष्क से भिन्न है पूर्णतया पृथक। मस्तिष्क से उसका कोई भी संबंध नहीं है। स्वार्थ से प्रेम का कोई भी संबंध नहीं है। अभी प्रेम की चर्चा न करें। तथ्य यह है कि प्रेम का अस्तित्व हो सकता है। हमारे भीतर सहानुभूति, समानुभूति, स्नेह, दया हो सकते हैं पर वह प्रेम नहीं है, इसीलिए उसे मैं अलग रखता हूँ। केवल अभी के लिए। प्रेम और स्वार्थ साथ-साथ हो ही नहीं सकते। प्रेम और समस्याओं का साथ संभव नहीं। अतः अगर 'पर' है तो समस्याओं को कोई अर्थ नहीं है। जहाँ वह है वहाँ समस्याएँ नहीं है।</p>
<p>P3: I am not sure if they cannot co-exist. They are independent; but I think even a</p>	<p>स०: वे साथ-साथ नहीं रह सकते इस पर मुझे</p>

<p>person who has self-interest and who has problems, occasionally acts without the interference of the brain - out of love. So I would not say that the existence of the brain denies love completely.</p>	<p>पक्का भरोसा नहीं है। वे स्वतंत्र हैं; लेकिन मैं समझता हूँ कि वह व्यक्ति भी जिसमें स्वार्थ है और जिसके पास समस्याएं हैं यदा कदा मस्तिष्क के हस्तक्षेप के बगैर कर्म करता है प्रेम वश। अतः मैं नहीं कहूँगा कि मस्तिष्क का अस्तित्व प्रेम को पूरी तरह नकार देता है।</p>
<p>K: Sir, I say it is like having occasionally a bad egg. I want a good egg every day - not occasionally. So I am asking you all, where does self-interest begin and where does it end? Is there an end to self-interest? Or is all action born out of self-interest? Don't tell me, 'occasionally'; I am not interested in that. Occasionally I look out of the window and that window is very narrow; I am in a prison.</p>	<p>कृ०: सर, मैं कहूँगा कि यह हुआ कभी-कभी एक अच्छा अण्डा खा लेना। पर मुझे तो अच्छा अण्डा प्रतिदिन चाहिए कभी कभी नहीं। इसलिए मैं आप सबों से पूछता हूँ: स्वार्थ कहाँ प्रारम्भ होता है और कहाँ समाप्त होता है? स्वार्थ का कहीं अंत भी है? अथवा स्वार्थ से ही समस्त कर्म उत्पन्न होते हैं। “कभी-कभी”, ऐसा नहीं कहिए, उसमें मेरी रुचि नहीं है। यदाकदा खिड़की के बाहर में देख लेता हूँ और वह खिड़की बड़ी ही सँकरी है; मैं कैदखाने में हूँ।</p>
<p>So please follow me for a minute. There is a tremendous order in the universe. A black hole is a part of that order. Wherever man enters he creates disorder. So I say, can I, as a human being who is the rest of humanity, create order in myself first? Order means no self-interest.</p>	<p>अतः मेरी बात पर कृपया एक मिनट गौर करें। ब्रह्मांड में एक अद्भुत व्यवस्था है। ‘ब्लैक होल’ उसी व्यवस्था का एक अंग है। जहाँ आदमी पहुँचता है वहाँ वह अव्यवस्था पैदा कर देता है। अतः मैं पूछता हूँ, क्या मैं जो एक मानव के रूप में शेष मानवता हूँ सर्वप्रथम स्वयं अपने भीतर व्यवस्था उत्पन्न कर सकता हूँ? व्यवस्था का अर्थ है कि स्वार्थ नहीं रहे।</p>
<p>P4: Sir, the problem is, it is not easy to deny on the basis of a common consciousness the nucleus that comes to shape itself as the limited self, the acquisitive self, for which all the problems are real, not imaginary. I mean I have disease, I have death - in what way could these be considered as no problems?</p>	<p>स०: समस्या यह है कि एक सामूहिक चेतना को मानकर उस केन्द्र को अस्वीकार कर देना आसान नहीं है जो स्वयं का निर्माण एक सीमित स्व के रूप में कर लेता है, एक संग्रहवृत्ति वाला स्व, जिसके लिए सभी समस्याएं वास्तविक हैं, काल्पनिक नहीं। मेरा मतलब है कि हमारे सामने बीमारियाँ हैं, मृत्यु है - यह कैसे संभव है कि इन्हें समस्या नहीं माना जाए?</p>
<p>K: Are you saying that the self is the problem? Why do we make it a problem? Why do you say the self is the problem? perhaps we make it into a problem and then say, how am I to get out of it? We don't look at the problem. We don't say, the self is the problem, let me understand it, let me look at this jewel without condemning it. The very condemnation is the problem. Do you follow what I mean? Therefore, I won't condemn it, I won't suppress it, I won't deny it, I won't transcend it; but let me first look at it.</p>	<p>कृ०: क्या आप यह कह रहे हैं कि स्व ही समस्या है? हम इसे एक समस्या क्यों बना देते हैं? आप ऐसा क्यों कहते हैं कि स्व ही समस्या है? संभवतः हम इसे एक समस्या का रूप दे देते हैं और तब कहते हैं, “मैं इससे बाहर कैसे निकलूँ? हम समस्या पर गौर नहीं करते। हम नहीं कहते कि स्व ही समस्या है, मुझे इसे समझने दीजिए, मुझे इस कीमती रत्न को गौर से देखने दीजिए बिना उसकी निंदा करते हुए। निंदा ही समस्या है। आप मेरा आशय समझ रहे हैं? अतः हम इसकी निंदा नहीं करेंगे, इसका दमन नहीं करेंगे, इसको नकारेंगे नहीं, इसका अतिक्रमण नहीं करेंगे। बल्कि पहले हम इसे गौर से</p>

	देखें।
P4: Sir, consider a person who has a thorn in his body and is feeling pain. The pain of the thorn is similar to the constraints and problems impinging upon the self.	स०: सर, मान लें कि एक आदमी के शरीर में काँटा चुभा है और वह दर्द का अनुभव करता है। काँटे का दर्द वैसा ही है जैसा विवशताओं तथा समस्याओं से ग्रस्त स्व का दर्द।
K: No, sir. If I have a thorn in my foot, I look at it first, I know the pain. I ask myself, why did I tread on it, why wasn't I aware of it? What is wrong with my observation, my eyes? Why didn't I see where I was going? I know if I saw it, I wouldn't touch it. Therefore I didn't see it. When the pain is there, then I act. I didn't see the thing that was in front of my foot. So my observation is at fault. So I say, what happened to my brain which didn't see that? Probably it was thinking of something else. Why was it thinking of something else when I am on the path? So you see, sir?	कृ०: नहीं सर। यदि मेरे पैर में काँटा चुभा है, तो मैं उसे पहले देखता हूँ, मैं अवगत होता हूँ दर्द से। मैं स्वयं से पूछता हूँ मैंने उसपर पाँव रखा ही क्यों? मैं क्यों सचेत नहीं था? मेरे देखने में यानी मेरी आँखों में क्या दोष है? मैं कहाँ जा रहा हूँ यह मैंने देखा क्यों नहीं? मैं जानता हूँ कि यदि मैंने देख लिया होता तो छूता तक नहीं। अर्थात् मैंने उसे नहीं देखा। जब दर्द हुआ तभी कुछ करने का प्रश्न उठा। वह चीज मेरे पाँव के सामने थी पर मैंने उसे नहीं देखा। तो मेरे देखने में खोट है। इसलिए मैं पूछता हूँ: मेरे मस्तिष्क को क्या हो गया कि उसने उसे नहीं देखा? संभवतः वह किसी और चीज के संबंध में सोच रहा था। जब मैं रास्ते में था तो वह किसी और चीज के बारे में क्यों सोच रहा था। आप समझ रहे हैं न?
P5: But in the case of psychological problems, the observer and what is observed are hopelessly entangled.	स०: लेकिन मनोवैज्ञानिक समस्याओं के मामले में तो द्रष्टा और दृश्य आपस में बुरी तरह उलझे हुए हैं।
K: No. We are going off to something else. Let us stick to one problem, one issue. Where does self-interest begin and where does it end, and is there an ending to it at all? And if it ends, what is that state?	कृ०: नहीं। हम विषय से दूर जा रहे हैं। हम केवल एक मसले पर, एक मुद्दे पर रहें। स्वार्थ कहाँ प्रारम्भ होता है और कहाँ वह समाप्त होता है? क्या उसका कभी अंत होता भी है? और अगर उसका अंत होता है तो वह कौन सी अवस्था है?
P6: May I hazard an answer? Probably, self-interest begins with the self itself and the self comes with the body.	स०: क्या मैं एक उत्तर प्रस्तुत करने का साहस करूँ? शायद स्व के साथ ही स्वार्थ आता है और स्व आता है शरीर के साथ।
K: I am not sure.	कृ०: मैं निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता।
P6: They go together. The idea of 'I'-ness and my coming into being, they go together.	स०: वे दोनों साथ-साथ चलते हैं। मैंपन का भाव और मेरा अस्तित्व में आना, ये दोनों साथ-साथ चलते हैं।
K: You say so, but I don't say so.	कृ०: आप ऐसा कहते हैं, पर मैं वैसा नहीं कहता।
P6: To my mind the very notion of self begins with the coming into being of this	स०: मेरी समझ से तो इस शरीर के अस्तित्व में आने के साथ ही स्व का भाव आ जाता है, और स्व

<p>body, and the self and self-interest go together. Self-interest can only end when the self ends. And a part of the self remains so long as the body remains. So, in an ultimate sense, it can only end with death. Short of that, we can only refine self-interest with the gradual perceiving of it, but we cannot wholly deny it so long as the body exists. That is how I see it.</p>	<p>तथा स्वार्थ साथ-साथ चलते हैं। स्व के समाप्त होने पर ही स्वार्थ समाप्त हो सकता है। और जब तक शरीर है स्व का कुछ अंश कायम रहेगा। अतः परम अर्थ में मृत्यु के साथ ही यह खत्म होगा। उसके पहले स्वार्थ को देखने से हम केवल उसको सूक्ष्म कर सकते हैं, लेकिन जब तक शरीर कायम है हम उसको पूरी तरह खत्म नहीं कर सकते। मैं तो इसे ऐसा देखता हूँ।</p>
<p>K: I understand. They are discovering in science that when the baby is born and suckling, it feels secure and it begins to learn who are the friends of the mother, who treat her differently, who are against her; it begins to feel all this because the mother feels it. It comes through the mother - who is friendly, who is not friendly. The baby begins to rely on the mother. So there it begins. It felt very safe in the womb, and suddenly, put out in the world it begins to realize that the mother is the only safety. There it begins to be secure. And that's our life. And I question whether there is security at all.</p>	<p>कृ०: मैं समझ रहा हूँ। खोज के आधार पर वैज्ञानिक बता रहे हैं कि शिशु जब जन्म लेता है और स्तनपान करता है तो वह स्वयं को सुरक्षित अनुभव करता है और वह यह सीखने लगता है कि माँ की सखी कौन है, कौन उससे भिन्न तरह का बरताव करते हैं, कौन उसके खिलाफ हैं। चूँकि उसकी माँ यह सब अनुभव करती है तो उसे भी यह लगने लगता है। उसे यह माँ से मिलता है कि मित्र कौन है, कौन मित्र नहीं है। शिशु माँ पर भरोसा करना शुरू करता है। तो वहीं से शुरू होता है। गर्भ में वह बहुत सुरक्षा महसूस करता था, और अचानक जब वह बाहर संसार में आया तो उसे महसूस होने लगा कि उसकी सुरक्षा केवल माँ है। वहाँ वह सुरक्षित अनुभव करने लगा। और यही है हमारा जीवन। लेकिन क्या कहीं कोई सुरक्षा है?</p>
<p>P2: Sir, in the Mexican earthquake, babies were found alive eleven days after being buried completely under the earth and there was no damage to the newborn ones. And the Mexican ambassador was telling me, the child, when it was taken out of that dark place, behaved exactly as it does when it comes out of the womb.</p>	<p>स०: सर, मेक्सिको के भूकम्प में अनेक शिशुओं को जमीन के नीचे ग्यारह दिनों तक पूरी तरह दबे रहने के बाद भी जीवित पाया गया और उन नवजात शिशुओं को कोई क्षति नहीं पहुँची थी। मेक्सिको के राजदूत मुझे बता रहे थे कि शिशु को जब मलबे के नीचे अंधेरी जगह से बाहर निकाला गया तो उसकी प्रतिक्रिया ठीक वैसी ही थी जैसी गर्भ के बाहर आने के बाद होती है।</p>
<p>K: It was like being still in the womb.</p>	<p>कृ०: मानो वह अभी भी गर्भ में ही था।</p>
<p>P3: Sir, the instinct of self-preservation is there in the animal too, but when it evolved into man, he started creating problems. The animal does not create problems. If we believe what the scientists say, that man evolved from the animal, then he has all the instincts which the animal has. The essential difference is that man has in addition the ability to think, and this ability to think has also created all those problems.</p>	<p>स०: सर, आत्म-रक्षा की सहज प्रवृत्ति जानवरों में भी होती है, पर जब वह मनुष्य के रूप में विकसित हुआ तो उसने समस्याएं पैदा करना शुरू कर दिया। जानवर समस्याएं पैदा नहीं करते। यदि हम वैज्ञानिकों के इस कथन पर विश्वास करें कि मनुष्य जानवर से ही विकसित हुआ है, तो उसमें वे सारी मूल प्रवृत्तियाँ मौजूद हैं जो जानवरों में पायी जाती हैं। मूलभूत अन्तर यह है कि इन प्रवृत्तियों के अतिरिक्त आदमी में सोचने की क्षमता भी है, और सोचने की इस क्षमता ने ही इन सारी समस्याओं को भी उत्पन्न</p>

And what you are asking is, can we use this ability not to create problems but to do something entirely different?	किया है। और आप जो पूछ रहे हैं वह यह है क्या इस क्षमता का उपयोग समस्या उत्पन्न करने में नहीं बल्कि कोई सर्वथा भिन्न कार्य करने में हो सकता है?
K: Yes, sir that's right.	कृ०: हाँ, सर, बिलकुल ठीक।
P7: The brain is the source of all problems. It has created the self and also all the problems. You suggest that the brain can end the problems. Then what is the difference between that brain which has ended and the mind?	स०: मस्तिष्क सभी समस्याओं का स्रोत है। इसने स्व उत्पन्न किया है तथा सभी समस्याएं भी उत्पन्न की हैं। आप संकेत कर रहे हैं कि मस्तिष्क समस्याओं का अंत कर सकता है। तब मस्तिष्क जिसने समस्याओं का अंत कर लिया है और मन इन दोनों में क्या अन्तर है?
P6: You said that the brain is the source of problems and out of the brain comes the ending of problems. With that ending, the brain that remains thinks, perceives, receives intimations. What is the actual difference between that brain and the mind?	स०: आपने कहा कि मस्तिष्क समस्याओं का स्रोत है और मस्तिष्क से ही समस्याओं का अंत होता है। उस अंत के साथ ही जो मस्तिष्क शेष रह जाता है वह सोचता है, अवलोकन करता है एवं सूचनाएं ग्रहण करता है। उस मस्तिष्क और मन में क्या अन्तर है?
K: I understand, I understand. Just a minute. See, you are asking a question that involves death. Before I can answer that question I must answer what death is. There is an Italian proverb that says: All the world is going to die, perhaps even I too! Do you see the joke of it? So, what is death? We know what is birth, mother, father, all the rest of it, and the baby is born and goes through this extraordinary tragedy. It is a tragedy; it is not something happy, joyous, free. It is a bigger tragedy than any Shakespeare ever wrote. So I know what is birth. Now, what is death? I am asking this; you tell me.	कृ०: मैं समझ रहा हूँ, मैं समझ रहा हूँ। एक मिनट रुकिए। देखिए, आप जो प्रश्न पूछ रहे हैं उसमें मृत्यु निहित है। उस प्रश्न का उत्तर देने के पहले मुझे निश्चय ही यह बताना चाहिए कि मृत्यु क्या है। एक इतालवी कहावत है: सारा संसार मरने वाला है, शायद मैं भी। इसका मतलब आप समझ रहे हैं न? तो, मृत्यु क्या है? हम यह तो जानते हैं कि जन्म क्या है माँ, बाप इत्यादि, और शिशु जन्म लेता है तथा इस असाधारण त्रासदी से गुजरता है। यह सचमुच एक त्रासदी है। यह कोई आनंद नहीं है। शेक्सपियर के किसी भी दुखांत नाटक से की बड़ी त्रासदी है यह। तो हम जानते हैं कि जन्म क्या है। अब, मृत्यु क्या है? मैं आपसे पूछ रहा हूँ, आप मुझे बताएं।
P1: When we were discussing time the other day, you spoke of a `now' in which was all time, both living and death. The brain, having the capacity to see the flow of living, also has the capacity to reveal that ending which is death. That is the answer.	स०: उस दिन जब हमलोग समय के संबंध में चर्चा कर रहे थे तो आपने एक ऐसे 'अब' अर्थात् तत्क्षण का जिक्र किया जिसमें सम्पूर्ण काल है, जीवन और मृत्यु दोनों। मस्तिष्क, जिसमें जीवन के प्रवाह को देख सकने की क्षमता है, उसमें यह भी क्षमता है कि वह उस अंत को बताए जो मृत्यु है। यही उत्तर है।
K: I said, living is attachment, pain, fear, pleasure, anxiety, uncertainty, the whole bag, and death is out there, far away. I keep a careful distance. I have got property,	कृ०: मैंने कहा था कि हमारा जीना है आसक्ति, पीड़ा, भय, सुख, चिन्ता, अनिश्चितता यानी यह सब और मृत्यु वहाँ और बहुत दूर है। सावधानीपूर्वक मैं उससे एक दूरी बनाये रखता हूँ। मेरे पास सम्पत्ति है,

books, jewels; that is my life. I keep it here and death is there. I say, bring the two together, not tomorrow, but now - which means end all this now. Because that's what death is going to say. Death says you can't take anything with you; so invite death - not suicide - invite death and live with it. Death is now, not tomorrow.	पुस्तकें हैं, जवाहरात है; यही है हमारा जीवन। मैं इसे यहाँ रखता हूँ और मृत्यु वहाँ है। मेरा कहना यह है कि इन दोनों को साथ-साथ रखिए, कल नहीं वरन अभी। इसका अर्थ है अभी इनका अंत कीजिए, क्योंकि मृत्यु बिल्कुल यही बात कहने जा रही है। मृत्यु कहती है कि आप कुछ भी अपने साथ नहीं ले जा सकते। अतः मृत्यु को आमंत्रित कीजिए, आत्महत्या नहीं, मृत्यु को बुलाइए और उसके साथ रहिए। मृत्यु अभी है, कल नहीं।
P1: There is something lacking in this. I may be able to invite death now and the brain may be still for a time, but the whole thing comes back again; then the problem of life comes back.	स०: इसमें कुछ कमी लग रही है। मृत्यु को अभी आमंत्रित कर सकता हूँ और थोड़े समय के लिए मस्तिष्क बिल्कुल शांत भी हो सकता है, किन्तु फिर सारी बातें लौट आती है और उसी के साथ लौट आती है जीवन की समस्या।
K: No, no. I am attached to him, he is a friend of mine, I have lived with him, we walked together, We played together, he is my companion, and I am attached to him. Death says to me, You can't take him with you. So death tells me, Free yourself now, not ten years later. And I say, Quite right, I will be free of him. Though I am still his friend, I am not dependent on him at all. Because, I can't take him with me. What's wrong with that? You are not arguing against that?	कृ०: नहीं, नहीं। अमुक व्यक्ति के साथ मेरा लगाव है, वह मेरा मित्र है, मैं उसके साथ रहा हूँ, हम साथ-साथ टहले हैं, हम साथ-साथ खेले हैं, वह मेरा साथी है, और मेरा उससे लगाव है। मृत्यु मुझसे कहती है, “आप उसे अपने साथ नहीं ले जा सकते।” इसलिए मृत्यु मुझे बताती है, “स्वयं को अभी मुक्त कर लो, दस वर्ष बाद नहीं।” और मैं कहता हूँ, “बिल्कुल ठीक, मैं उस मित्र से मुक्त हो जाऊँगा।” यद्यपि अभी भी मैं उसका मित्र हूँ, परंतु मैं उस पर जरा भी निर्भर नहीं हूँ। क्योंकि मैं उसे अपने साथ ले नहीं जा सकता। इसमें क्या गड़बड़ी है? आप इसके तो विरुद्ध नहीं है न?
P5: Which means, sir, you have to end all gratification...	स०: इसका अर्थ हुआ सर, हमें समस्त तुष्टियों को समाप्त कर देना है।
K: No, I am not saying that. I said, attachment.	कृ०: नहीं, मैं यह नहीं कह रहा हूँ। मैंने कहा आसक्ति।
P5: All attachment...	स०: समस्त लगाव, आसक्तियाँ।
K: That's all.	कृ०: बस, इतना ही।
P8: Sir, is it possible to end that so long as the two bodies exist?	स०: सर, जब तक दो शरीरों का अस्तित्व है, तब तक समस्त आसक्ति का अंत करना क्या संभव है?
K: Oh, yes, sir. Our bodies are not tied together; they are two separate bodies. Psychologically I take him as a friend and get slowly attached to him inwardly. I am	कृ०: जी हाँ, सर। हमलोगों के शरीर एक साथ जुड़े हुए नहीं हैं। ये दो अलग-अलग शरीर हैं। मनोवैज्ञानिक रूप से मैं उसे मित्र मानता हूँ और धीरे-धीरे भीतर से मैं उसके प्रति आसक्त हो जाता

<p>not attached to him outwardly because he goes one way and I go another - he drinks, I don't, and so on. But still he is a friend of mine. And death comes and says you can't take him with you. That is a fact. So I say, All right, I will be detached now.</p>	<p>हूँ। बाहर से मैं उससे जुड़ा नहीं हूँ क्योंकि वह इस रास्ते पर जाता है और मैं दूसरे, वह शराब पीता है, मैं नहीं पीता, इत्यादि। पर फिर भी वह मेरा मित्र है। और मृत्यु आकर कहती है, “आप उसे अपने साथ नहीं ले जा सकते” यह एक तथ्य है। अतः मैं कहता हूँ, बिल्कुल ठीक, मैं अब अनासक्त हो जाऊँगा।</p>
<p>P3: Sir, isn't it that the problem comes not because you get pleasure from your friend or your wife, but because you begin to use that pleasure as a fulfilment for yourself, and therefore you want a continuity of that and you want to possess that person?</p>	<p>स०: सर, क्या यह सच नहीं है कि समस्या इसलिए नहीं आती कि हम अपने मित्र से या अपनी पत्नी से सुख पाते हैं, वरन उस सुख का इस्तेमाल हम अपनी परिपूर्णता के लिए करने लगते हैं, और इसीलिए हम उसकी निरन्तरता चाहते हैं और इस प्रकार उस व्यक्ति को हम अपने वश में रखना चाहते हैं?</p>
<p>K: Yes. Therefore, what is relationship? I won't go into it, we have no time. You see, sir, you are not meeting my point. I asked you where self-interest begins and ends. Is ending more important than anything else? - ending? And what is then that state in which there is no self-interest at all? Is it death? - which means an ending. Death means ending - ending everything. So it says, 'Be intelligent, old boy, live together with death.'</p>	<p>कृ०: हाँ। अतः संबंध क्या है? अभी हम लोग इस विषय की छानबीन नहीं करेंगे, हमलोगों के पास समय नहीं है। सर, आप देखिए कि आप मेरी बात का जवाब नहीं दे रहे हैं। मैंने आपसे पूछा था : स्वार्थ का प्रारंभ कहाँ होता है? और अंत कहाँ होता है? क्या उसका अंत करना किसी भी अन्य बात से अधिक महत्त्व का है? अंत करना। और वह कौन सी अवस्था है जहाँ स्वार्थ बिल्कुल ही नहीं है? क्या वह मृत्यु है? जिसका अर्थ है अंत। मृत्यु का अर्थ है अंत। हर चीज का अन्त। इसलिए मृत्यु कहती है, “प्रज्ञावान बनो, मृत्यु के साथ-साथ जिओ।”</p>
<p>P3: Which means die but keep the body. The other death is coming anyway.</p>	<p>स०: इसका अर्थ है मृत हो जाओ पर शरीर को जिंदा रखो। हर हालत में वह मृत्यु तो आने वाली है।</p>
<p>K: Body? Give it to the birds or throw it into the river. But psychologically, this tremendous structure I have built I can't take with me.</p>	<p>कृ०: शरीर? इसे पक्षियों को दे दो या नदी में फेंक दो। परंतु मनोवैज्ञानिक तल पर जो मैंने यह विशाल ढाँचा खड़ा किया है, उसे मैं अपने साथ नहीं ले जा सकता।</p>
<p>P3: Is it an instinct, sir? Is it an inheritance through the genes?</p>	<p>स०: सर, क्या यह एक मूल प्रवृत्ति है? क्या यह एक ऐसी चीज है जो हमें 'जीन्स' के माध्यम से विरासत में मिली है?</p>
<p>K: Yes, probably. But animals don't think this way; I have watched several animals.</p>	<p>कृ०: हाँ, शायद। पर जानवर इस ढंग से नहीं सोचते; मैंने अनेक जानवरों की गतिविधियों को गौर से देखा है।</p>
<p>P3: No, therefore I am not sure if it is an instinct.</p>	<p>स०: नहीं, इसलिए मैं नहीं जानता कि यह मूल प्रवृत्ति है।</p>

K: That's all I am saying. Don't reduce it to an instinct, sir.	कृ०: मैं यही कह रहा हूँ। सर, इसे मूल प्रवृत्ति न बना डालिए।
P8: What was the joke you were going to tell us?	स०: आप कौन सा चुटकुला हमें सुनाने जा रहे थे?
K: A man dies and meets his friend in heaven. They talk and he says, 'If I am dead, why do I feel so awful?'	कृ०: एक आदमी मर जाता है और स्वर्ग में अपने मित्र से मिलता है। वे बातें करते हैं और वह कहता है, 'यदि मैं सचमुच मर गया हूँ, तो मैं इतना बेचैन क्यों अनुभव कर रहा हूँ?'
J. Krishnamurti The Future is Now Chapter 3 11th November 1985	राजघाट, ११ नवंबर, १९८५
	अनुवाद : सीताराम जायसवाल